श्री

स्थानाङ्गसूत्र भाग चौथेकी

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
	पांचवे स्थानका दूसरा उद्देशा	
१	पांचवे स्थानके दूसरे उद्देशेका विषय विवरण	१
२	विहारके विषयमें कल्पने योग्य और नहीं कल्पनेयोग्यका निरूपण	२–१०
३	गुरुप्रायश्चित्तका निरूपण	११–१६
४	निर्ग्रन्थोंके राजाके अन्तःपुरमें प्रवेशका निरूपण	१७–२०
५	स्त्रियोंमें रही हुई क्रियाविशेषका निरूपण	२१–२३
६	गर्भके संबन्धमें–गर्भ विषयका निरूपण	२४–२८
७	साध्वीके संबद्ध कथनका निरूपण	२९–३६
८	आस्रव, संवर वगैरह द्वारोंका निरूपण	३७–४०
९	आस्रव विशेषरूप क्रिया स्थानका निरूपण	४१–५२
१०	निर्जराके उपायभूत परिज्ञाका निरूपण	५३–५४
११	व्यवहारका निरूपण	५५–७०
१२	संयत और असंयतोंमें सुप्त और जाग्रतके स्वरूपका निरूपण	७१–७२
१३	कर्मबन्धके कारणका निरूपण	७३–
१४	उपघातके स्वरूपका निरूपण	७४–८१
१५	बोधीके सम्यक प्राप्तिका और अप्राप्तिके कारणका निरूपण	८२–९२
१६	संयमके स्वरूपका निरूपण	९३–१०३
१७	संयम और असंयमका निरूपण	१०४–१०८
१८	बादर भेदवाले वनस्पतिका, पांच प्रकारके बादर भेदोंका निरूपण	१०९
१९	आचार कल्पकेस्वरूपका निरूपण	१०९–११९
२०	मनुष्य क्षेत्रमें रहे हुवे पदार्थ विशेषका निरूपण	१२०–१२८
२१	ऋषभ विगैरह तीर्थंकरोंका निरूपण	१२९–१३०
२२	भावप्रबुद्धको कारणके होने पर जिनाज्ञाकी अनतिक्रमणता होनेका निरूपण	१३१–१४२
२३	आचार्य और उपाध्यायके अतिशयमें रहने पर जिनाज्ञाका अनुल्लंघनका निरूपण	१४३–१५१

२४	अचार्य और उपाध्यायके गणसे बाहर होनेके विषयका निरूपण	१५१–१५५
२५	ऋद्धिवाले मनुष्य विशेषका निरूपण	१५६–१५८
	तीसरा उद्देशा—	
२६	अस्तिकायके स्वरूपका निरूपण	१५९–१७१
२७	इन्द्रियोंके अर्थोंको और इन्द्रिय संबंधी पदार्थोंका निरूपण	१७२–१८७
२८	बादर जीवविशेषका निरूपण	१८८–१९१
२९	सचेतन वायुका विशेष प्रकारसे निरूपण करनेवाले निर्ग्रन्थका निरूपण	१९२–२०५
३०	निर्ग्रन्थोंके उपधि विशेषका निरूपण	२०६–२१०
३१	कायादिक धर्मोपकरणताका निरूपण	२११–२१८
३२	शौचके स्वरूपका निरूपण	२१९–२२१
३३	छद्मस्थ केवलीके ज्ञेय अज्ञेय पदार्थोंके विषयका कथन	२२२–२२४
३४	अधोलोकमें रहे हुए एवं ऊर्ध्वलोकमें रहे हुए अतीन्द्रिय भावोंका निरूपण	२२५–२२८
३५	मत्स्यके दृष्टान्तसे भिक्षुके स्वरूपका निरूपण	२२९–२३०
३६	वनीपकके स्वरूपका निरूपण	२३१–२३४
३७	अचेलकके प्रशंसास्थानोंका निरूपण	२३५–२३७
३८	उत्कटके पांच भेदोंका निरूपण	२३८–२३९
३९	समितिके पांच प्रकारका निरूपण	२४०–२४१
४०	जीवके स्वरूपका निरूपण	२४२–२४४
४१	वनस्पतिजीवके योनिविच्छेदका निरूपण	२४५–२४७
४२	पांच प्रकारके संवत्सरका निरूपण	२४८–२५८
४३	जीवका शरीरसे निर्गम (निकलना)का निरूपण	२५९–२६०
४४	आयुके छेदका निरूपण	२६०–२६२
४५	आनंतर्यका निरूपण	२६०–२६२
४६	पांच प्रकारके अनन्तका निरूपण	२६४–२६७
४७	ज्ञानके स्वरूपका निरूपण	२६८
४८	स्वाध्यायके पंचविधताका निरूपण	२६९–२७०
४९	प्रत्याख्यानके स्वरूपका निरूपण	२७१–२७४

५०	प्रतिक्रमणके स्वरूपका निरूपण	२७५–२७७
५१	पांच प्रकारके वाचनास्थानका निरूपण	२७९–२८१
५२	नारकादिकोंके यथावस्थित भावोंका निरूपण	२८२
५३	जम्बूद्वीप आदिके यथावस्थित भावोंका निरूपण	२८३–२८५
५४	भरतक्षेत्रमें स्थित तीर्थंकरोंका निरूपण	२८६
५५	क्षेत्रभूत चमरचञ्चादिका निरूपण	२८७–२९०
	छट्ठा स्थान प्रारंभ—	
५६	छट्ठे स्थानका विषय विवरण	२९१
५७	गणधरोंके गुणका निरूपण	२९२–२९६
५८	जिनाज्ञाका अविराधकपनेका निरूपण	२९७–३००
५९	छद्मस्थोंके स्वरूपका निरूपण	३०१–३०४
६०	जीवको अजीव करनेका छह प्रकारताका निरूपण	३०५–३०६
६१	संसारिकजीवका निरूपण	३०७–३११
६२	जीवोंके दुर्लभ पर्याय विशेषका निरूपण	३१३–३१८
६३	इन्द्रियार्थों के छ प्रकारका निरूपण	३१९–३२०
६४	साता और असाताके षड्विधताका निरूपण	३२१–३२२
६५	छह प्रकारके प्रायश्चितोंका निरूपण	३२३–३२४
६६	छह प्रकारके मनुष्य आदिकोंका निरूपण	३२५
६७	छह प्रकारके ऋद्धिवालोंका निरूपण	३२६–
६८	उत्सर्पिणी कालमें जम्बूद्वीपके मनुष्यके प्रमाणका निरूपण	३२७–३२९
६९	छह प्रकारके संहननका निरूपण	३३०–३३२
७०	छह प्रकारके संस्थानका निरूपण	३३३–३३५
७१	अनात्मावालेजीवोंको अहित करनेवाले छह स्थानोंका निरूपण	३३६
७२	छ प्रकारके आर्य मनुष्योंका निरूपण	३३९–३४१
७३	लोकस्थितिका निरूपण	३४२–३४३
७४	जीवोंकी गति और दिशाओंका निरूपण	३४४-३४८
७५	संयत मनुष्योंके आहारग्रहणऔर आहारका ग्रहण नहीं करनेका निरूपण	३४९–३५२
७६	उन्मादस्थानका निरूपण	३५३–३५५
७७	छह प्रकारके प्रमादका निरूपण	३५६-३६१

७८	प्रमाद विशिष्ट प्रत्युपेक्षणाका निरूपण	३६१–३६७
७९	लेश्याके स्वरूपका कथन	३६८–३६९
८०	देवसूत्रका कथन	३७०
८१	दिक्कुमारीदिकोंका निरूपण	३७१–३७३
८२	धरणेन्द्रादिकोंका सामानिक साहस्त्रीका निरूपण	३७३–
८३	विशिष्ट मतिवाले देवोंकी गतिके भेदका निरूपण	३७४–३८७
८४	तपके भेदोंका निरूपण	३८८–३९३
८५	विवादके स्वरूपका निरूपण	३९४–३९५
८६	क्षुद्रप्राणियोंके स्वरूपका निरूपण	३९६–३९७
८७	छह प्रकारकी गोचरचर्याका निरूपण	३९८–४००
८८	असाधुचर्याके फलभोगनेवालोंकी गतिका निरूपण	४०१–४०२
८९	साधुचर्याके फल भोगनेवालेका निरूपण	४०३–४०४
९०	नक्षत्रोंके स्वरूपका निरूपण	४०५–४१०
९१	संयम और असंयमके स्वरूपका निरूपण	४११–४१२
९२	मनुष्य क्षेत्रमें रही हुई वस्तुका निरूपण	४१३–४१८
९३	कालविशेषका निरूपण	४१९–४२१
९४	ज्ञानके स्वरूपका निरूपण	४२२–४२४
९५	अवधिज्ञानके स्वरूपका वर्णन	४२५–४२७
९६	ज्ञानिके अवचन–नही कहने योग्यका निरूपण	४२८–४२९
९७	अवचनमें प्रायश्चित्तका कथन	४३०–४५१
९८	कल्प विषयका निरूपण	४५२–४६०
९९	कल्पस्थितिका निरूपण	४६१–४७१
१००	महावीरस्वामी संबंधी कथन	४७२
१०१	देवके संबंधी निरूपण	४७३
१०२	अहारका परिणाम और विपरिणामका निरूपण	४७४–४७७
१०३	छह प्रकारके प्रश्नका निरूपण	४७८–४८०
१०४	इन्द्रके अनादिपनेका निरूपण	४८१–४८४
१०५	भेद सहित आयुबन्धका निरूपण	४८५–४९४
१०६	औदयिक विगैरह भावोंका निरूपण	४९५–५११
१०७	छ प्रकारका प्रतिक्रमणका निरूपण	५१२–५१५

१०८	चयादिका कथन	५१६–५१७
	सातवें स्थानका प्रारम्भ—	
१०९	सातवें स्थानका विषयविवरण	५१८–
११०	सात प्रकारके गणोंके अपक्रमण–निकलनेका निरूपण	५१९–५२६
१११	सात प्रकारके विभङ्गज्ञानका निरूपण	५२७–५४३
११२	सात प्रकारके जीवोंका निरूपण	५४४–५४८
११३	संग्रहके स्थानोंका निरूपण	५४९–५५३
११४	पिंडैषणाका निरूपण	५५४–५६४
११५	सात प्रकारकी पृथ्वीयोंके स्वरूपका कथन	५६५–५६९
११६	बादर वायुकायके स्वरूपका कथन	५७०
११७	सात प्रकारके भयस्थानोंका निरूपण	५७१–५७२
११८	छ छद्मस्थोंको जाननेका निरूपण	५७३–५७५
११९	केवलीयोंको जाननेका कथन	५७५
१२०	सात प्रकारके मूलगोत्रका निरूपण	५७६–५७९
१२१	सात प्रकारका मूलनयका निरूपण	५८०–६०३
१२२	सात प्रकारके स्वरोंका निरूपण	६०४–६३६
१२३	लोकोत्तर कायक्लेशोंका निरूपण	६३७–६३८
१२४	मनुष्यलोक और वर्षधर पर्वतोंका निरूपण	६३९–६४३
१२५	कुलकर आदिका निरूपण	६४४–६४७
१२६	दण्डनीतिका निरूपण	६४८–६५१
१२७	चक्रवर्त्ती राजाके एकेन्द्रिय पंचेन्द्रियवाले रत्नोंका निरूपण	६५२–६५३
१२८	दुष्षम-सुषम काल ज्ञानका कथन	६५४–६५९
१२९	सात प्रकारके आयुष्यके भेदोंका कथन	६६०–६६१
१३०	मल्लीनाथ भगवान्का वर्णन	६६२–६६५
१३१	दर्शनके स्वरूपका निरूपण	६६६–६६७
१३२	छद्मस्थावस्थासे प्रतिबद्ध सूत्रका कथन	६६८–६७०
१३३	सात प्रकारकी विकथाओंका निरूपण	६७१–६७४
१३४	आचार्यके सातिशयपनेका निरूपण	६७५–६७७

१३५	संयम और असंयम आदिके भेदोंका निरूपण	६७८-६८१
१३६	अतसी कुसुम आदि धान्योंका योनिकाल-उत्पादक स्थिति कालका निरूपण	६८२-६८४
१३७	बादर-अप्कायिक आदिकोंका स्थितिकालका निरूपण	६८५-६८५
१३८	शक्र और ईशानेन्द्रके अग्रमहिषीयोंकी संख्याका और स्थितिका निरूपण	६८६-६८८
१३९	सनत्कुमार आदि कल्पोंमें रहे हुए देवोंकी स्थितिका निरूपण	६८९-६९०
१४०	नन्दीश्वरद्वीपके अन्तर्गत द्वीपोंका निरूपण	६९१-६९५
१४१	चमरेन्द्रादिकोंके अनीक और उनके अनीकाधिपतियोंका निरूपण	६९६-७०४
१४२	चमरेन्द्रादिकोंके पादातानीक और उनके अनीकाधिपतियोंका निरूपण	७०५-७१२
१४३	सात प्रकारके वचनविकल्पोंका निरूपण	७१२
१४४	विनयके स्वरूपका निरूपण	७१३-७२७
१४५	समुद्घातके स्वरूपका निरूपण	७२८-७३५
१४६	निह्नवोंके स्वरूपका निरूपण	७३६-७३९
१४७	साता और असाताके स्वरूपका निरूपण	७४०
१४८	ज्योतिष्क देवोंका निरूपण	७४१-७४५
१४९	देवोंके निवासभूत कूटोंका निरूपण	७४६-७४८
१५०	द्वीन्द्रिय जीवोंका निरूपण	७४९
१५१	चयादिका निरूपण	७४९-७५१

समाप्त